पर्यावरण पर मनुष्य का प्रभाव(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ. वीरेन्द्र कुमार

राजेश कुमार

जब से मनुष्य ने इस पृथ्वी पर रहना प्रारम्भ किया है, तब से लेकर आज तक, मनुष्य और पर्यावरण के सम्बन्धों में परिवर्तन होता रहा है। इसके अलावा, एक ही समय में, भिन्न–भिन्न स्थानों पर मनुष्य और पर्यावरण के सम्बन्ध बदलते रहे हैं। उदाहरण के लिए, आदिमानव पर्यावरण को ही प्रभावी मानता था। बिजली की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट से उसे डर लगता था। सघन वन और वन्य जीवों से वह भयभीत रहता था। उसे पर्यावरण के अनुकूल बनना पड़ा।

मानवीय क्रियाकलापों से पर्यावरण पहले से ही बिगड़ता रहा है। यह बात अलग है कि उसने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था। ऐसा समझा जाता है कि बड़े पैमाने पर वनों के विनाश से ही इराक में मैसोपोटामिया की सभ्यता, पीरू की इंका सभ्यता तथा सिन्धु घाटी की प्राचीन सभ्यताओं का पतन हुआ। मनुष्य पारिस्थितिक पिरामिड के शीर्ष पर है। वह परभक्षी की तरह कार्य करता है, क्योंकि वह सर्वाहारी है। मनुष्य विभिन्न प्रकार के पौधों और जन्तुओं को खाता है। मनुष्य भूमि पर खेती करता है। इसका पारितंत्र पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। खेती से प्राकृतिक पौधों का मूल आवरण हट जाता है। उसके स्थान पर एक–दो फसलें बोयी जाने लगती हैं। इससे जीवों में विविधता कम हो जाती है। इस प्रक्रिया में पारितंत्र सरल बन जाता है, जिसमें एक ही तरह के पौधों की प्रधानता होती हैं। नाशक जीव और फसलों के रोग अकेली फसल पर हमला कर देते हैं।